स्वार्थपूर्ण भावनायें ही सम्बन्धों में लाती है टकराव

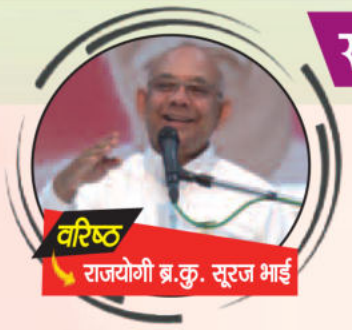

वसुंधरा के प्रत्येक कोने से सम्बन्धों में बढ़ती हुई कड़वाहट की आवाज़ सुनाई देती है। मानव मन चीत्कार कर कह रहा है कि जिनके लिए मैंने जीवन भर इतना सबकुछ किया, उनका मुझसे ऐसा व्यवहार...असहनीय...निन्दनीय...। सम्बन्धों का सुख बाह्य रूप से तो दृष्टिगोचर होता है, किंतु अंदर झांककर देखने से विष और पीड़ा के ही दर्शन होते हैं। कोई किसी से खुश नहीं, कोई किसी से संतुष्ट नहीं,सदा ही दूसरों की शिकायतें, मनुष्य के मन को व्याकुल कर रही हैं।

पारस्परिक सम्बन्ध-जिनका प्रारंभ स्नेह रूपी बीज से ही होता है और जिनके बिना जीवन का कोई मूल्य ही नहीं रह जाता, क्यों बिगड़ गये? क्या गलती हो रही है? जबकि हम सभी जानते हैं कि जीवन में सभी को विविध सम्बन्धों में आना पड़ता है, विभिन्न संस्कारों के व्यक्तियों से व्यवहार करना होता है, जीवन कहीं भी अकेला नहीं है। जीवन के सुख व दुःख, हार व जीत भी दूसरों पर आश्रित हैं। और यदि सम्बन्धों में कड़वाहट भर गई तो जीवन का सुख छिन जाता है, जीवन की शांति भस्म हो जाती है और मनुष्य प्रेम की प्यास में,प्यासी दृष्टि से चहुं ओर निहारने लगता है।

तो सम्बन्ध की शुरूआत प्रेम है, इसका मध्य जहाँ-तहाँ कड़वाहट से भरा है और अंत...? अंत लम्बे मध्यकाल पर आधारित रहता है। ज्यों-ज्यों मनुष्य सम्बन्धों को आगे बढ़ाता है, कुछ विकृतियां प्रवेश करके उन्हें जहरीला बनाने लगती हैं। हमें उनका एहसास होना चाहिए और सहज ही उन दीवारों को लांघ जाना चाहिए। तो प्रस्तुत है कुछ मूल कारण व निवारण सम्बन्ध बिगाड़ने वाला हमारा प्रथम शत्रु है- स्वार्थ...। जहाँ स्वार्थपूर्ण भावनाएं प्रबल हुईं और सब कुछ मटियामेट। स्वार्थ पूर्ति न होने पर मनुष्य आपसी स्नेह, नाते, पूर्वकाल के उपकार आदि सब कुछ भूल जाता है। स्वार्थी मनुष्य कितना निर्दयी बन जाता है- यह आज चारों ओर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। माँ और बेटे का कितना निर्मल सम्बन्ध है। वह बेटा जिसकी माँ ने सच्चे दिल से पालना की थी, ज़रा-सी स्वार्थ पूर्ति न होने पर माँ को छोड़कर चला जाता है। पति,पत्नी का सम्बन्ध कितना सुखद है, परंतु दहेज की स्वार्थ पूर्ति के अभाव में पत्नियों को ज़िंदा ही अग्नि के सुपुर्द कर दिया जाता है। कितना भयावह है यह स्वार्थ! इसकी सत्य कहानियों के तो ग्रंथ लिखे जा सकते हैं। जो आज अपने हैं, वही कल पराए हो जाते हैं।

अतः सम्बन्धों को सतत् मधुर बनाए रखने के लिए स्वार्थ का त्याग करना होगा, स्वयं से पूछना होगा कि स्वार्थ बड़ा या सम्बन्ध? धन बड़ा या स्नेह, पदार्थ बड़े या आशीर्वाद का हाथ बड़ा? परंतु जो ज्ञान विहीन पशु-तुल्य मनुष्य धन और पदार्थों को ही जीवन का आधार मानते हैं वे स्वप्न में भी सच्चे सुखों की अनुभूति नहीं कर पाते। सम्बन्धों के अमृत में ज़हर घोलने वाला दूसरा सूक्ष्म शत्रु है- मनुष्य का स्वयं का ही ज़हरीला स्वभाव, अंहकारी भाव, चिड़चिड़ापन अथवा स्वयं का कटु

जहाँ स्वार्थपूर्ण भावनाएं प्रबल हुईं और सब कुछ मटियामेट। स्वार्थ पूर्ति न होने पर मनुष्य आपसी स्नेह, नाते, पूर्वकाल के उपकार आदि सब कुछ भूल जाता है। स्वार्थी मनुष्य कितना निर्दयी बन जाता है- यह आज चारों ओर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

स्वभाव ही मनुष्य को सबसे ज़्यादा परेशान करता है। हम एक ऐसी नारी को जानते हैं जो सदा ही दूसरों पर दोषारोपण करती है कि ये-ये लोग मुझे बहुत तंग करते हैं परंतु जब तक उसे यह एहसास न हो जाए कि परेशान वह अपने स्वभाव के कारण ही है, उसकी परेशानी दूर नहीं होगी। उस देवी का नाम है सुखदेवी। परंतु उसका अनुभव व काम वैसा नहीं है। न वह किसी को सुख देती और इसलिए न उसे सुख मिलता। तो स्वभाव को मृदुल व सरल बनाओ। मीठे स्वभाव से दूसरों के दिलों पर राज्य करो। परंतु यदि तुम ऐसा नहीं करते तो सम्बन्धों में बिगड़ाव का फल भुगतने के लिए तैयार रहो, फिर यह शिकायत न करो कि देखो आज की नई पीढ़ी कितनी बिगड़ गई... सबकी राह अपनी बन गई है। तुम भी सम्बन्धों का सुख ले सकते हो।

दूसरों से कामनाएं रखना भी सम्बन्ध बिगाड़ना है। एक माँ सदा ही अपने बड़े बच्चों से अनेक कामनाएं रखती है, अपनी बहुओं से उसकी अनेक कामनाएं रहती हैं। वे उसकी सेवा करें, वे उसके लिए सुख-सुविधा के सामान जुटाएं। क्योंकि वह स्वयं को इनकी अधिकारी मानती है। वह प्रायः कहा करती है कि हमने बच्चों को पाला-पोसा, बड़ा किया, पढ़ाया, क्या अब बच्चों का कर्त्तव्य हमारी सेवा करना नहीं है! वह कब से आह्वान करती थी कि घर में बहू आयेगी, मेरे पैर दबाया करेगी। परंतु बहु आती है आधुनिक, वह स्वयं कामना करती है कि सास मेरी सेवा करे। बच्चे अपने काम में व्यस्त हैं और माँ की कामनापूर्ति न होने से माँ कुढ़ती रहती है, सदा अपने भाग्य को कोसती रहती है। हमारे मन की कामनाओं से दूसरों की भावनाएं बदलती हैं। हमारी कामनाएं हमें कमज़ोर करती हैं। माँ की कामनाएं ही बच्चों को उनसे दूर करती हैं। परंतु यदि बूढ़ी माँ का विवेक यह सोचने लगे कि मैंने तो बच्चों के लिए अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया है, न कि एहसान। अब मैं स्वयं ही स्वयं की सेवा करूंगी। तो उसका अथकपन, अनासक्त व स्वार्थ रहित भाव बच्चों में भी सेवाभाव पैदा करेगा, बहू में भी निर्माण भाव पैदा करेगा और सम्बन्ध मधुर हो जाएंगे।

पारस्परिक सम्बन्धों को स्नेहपूर्ण रखने के लिए कुछ छोटी-छोटी परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण बातों पर भी ध्यान रखना परमावश्यक है। कभी-कभी हम दूसरों की किसी बीती हुई गलत बात को बार-बार उछालते रहते हैं। बार-बार उस बात को बीच में लाकर मजा किरकिरा करते रहते हैं कि हाँ मैं जानता हूँ तुमने तब क्या किया था, मुझे समय पर मदद नहीं की थी, मुझे अमुक समय धोखा दिया था। परंतु यदि दूसरा स्वयं को सुधार भी चुका हो, तो भी हम उसकी वही पुरानी बात चित्त में धारण किये रहते हैं और उसे उसी दृष्टि से देखते हैं। यह गलत है। इसी प्रकार किसी के किसी विशेष अवगुण को चित्त में धरकर हम उससे वैसा ही व्यवहार बनाए रखते हैं। मंदिर में जाकर तो हम मुक्त कंठ से गा लेते हैं- हे प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो, परंतु दूसरों के अवगुण चित्त पर धरने में हम ज़रा भी नहीं हिचकते। हमने देखा- एक परिवार में माँ क्रोधी स्वभाव की थी। उसके दो बेटे, दो बेटियाँ, बार-बार उसे यही कहते थे- माँ, तुम बड़ा क्रोध करती हो। यह सुनकर माँ का क्रोध बढ़ता था- वह कहती थी मुझे शिक्षा देते हो... परिणाम यह था कि घर में सदा मनमुटाव, सदा अशांति।

तो कई जगह हमें दूसरों के अवगुणों को नगण्य समझना चाहिए, उनको बार-बार याद दिलाना नहीं चाहिए। उनके अवगुणों को महत्व नहीं देना चाहिए, तब हमारे सम्बंधों में मिठास कायम रहेगी।

ओझर-म.प्र.। जिला कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेणुका बहन।

गंज बासौदा-म.प्र.। 'राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में पत्रकार सत्यनारायण शर्मा ब्यूरो चीफ नवदुनिया, सुरेश कुमार तलवानी रुचिर टाइम्स, ओम प्रकाश चौरसिया स्टार समाचार आदि को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन व ब्र.कु. रुकमणी बहन।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'गीता ज्ञान एवं जीवन मूल्य' विषय पर आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता डॉ.पुष्पा पांडेय, डॉ.श्याम, डॉ.शिव कुमार पांडेय, अभय जैन, ब्र.कु.भावना बहन, ब्र.कु.वर्षा बहन, पवन पांडेय आदि उपस्थित रहे।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। शिक्षा दिवस के अवसर पर शिक्षाविदों का संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में 'शिक्षा में मूल्यों का महत्व' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विमला दीदी। मंचासीन हैं आर.के. स्वर्णकार,संभागीय शिक्षा अधिकारी, सुधीर उपाध्याय,ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर, ममता आनंद,प्रो.ट्रिपल आई.टी., ब्र.कु. विमला दीदी तथा ब्र.कु. विनीता।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के नव विश्व भवन में 'चमत्कार मेरे विचारों का' विषय पर आयोजित बाल दिवस के कार्यक्रम में चिराग सोशल वेलफेयर सोसायटी के डायरेक्टर मंगल पाण्डे, डॉ.अरविन्द गुप्ता, जिला परियोजना अधिकारी साक्षरता प्राचार्य लायवलीहुड कॉलेज गिरीश गुप्ता, वसुधा महिला मंच संयोजिका वंदना दत्ता, गायत्री परिवार सदस्य अमृता जायसवाल, सुनिधि शुक्ला, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, ब्र.कु. ममता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन, ब्र.कु. अवंतिका बहन आदि उपस्थित रहे।

छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। पुलिस लाइन स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में पदस्थ आरक्षक से पदोन्नत प्रधान आरक्षकों के जिला स्तर पर चल रहे छह दिवसीय इंडक्शन कोर्स के दौरान पुलिस स्टाफ को दो दिवसीय 'स्ट्रेस एंड इमोशनल मैनेजमेंट एवं खुशनुमा जीवन' का प्रशिक्षण देने हेतु ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन एवं ब्र.कु. कल्पना बहन द्वारा सम्बोधित किया गया तथा ब्र.कु. भारती बहन द्वारा राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया गया। कार्यक्रम में 50 प्रधान आरक्षकों ने भाग लिया।

मुम्बई-मलाड(दिंडोशी)। दीपावली के शुभ अवसर पर सेवाकेन्द्र में आने पर नृत्यांगना सुधा चंद्रन तथा रवि जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शोभा बहन।

भिलाई-छ.ग.। नारी शक्ति सम्मान एवं देशभक्ति पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्टील सिटी प्रेस क्लब के वरिष्ठ पत्रकार शिव श्रीवास्तव, ब्र.कु. आशा बहन, आज का अर्जुन के संपादक रामाराव तथा दैनिक श्रमबिंदु के पत्रकार शमशुद्दीन।

सारंगपुर-म.प्र.। दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण के अंतर्गत 'आओ मिलकर करें दैवीय संस्कृति की स्थापना' थीम पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में एस.डी.एम. राकेश मोहन त्रिपाठी, एस.डी.ओ.पी. जॉयस दास, पूर्व विधायक गौतम टेटवाल, पूर्व विधायक कृष्णमोहन मालवीय, नगरपालिका उपाध्यक्ष व लायंस क्लब जोन चेयरपर्सन निलेश वर्मा, वरिष्ठ समाजसेवी मांगीलाल सोलंकी, राजगढ़ से संस्थान की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भाग्य लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. नीरज भाई, पार्षद जन, पत्रकार बंधु, पर्यावरण प्रेमी दल, महादेव मित्र मंडल, साईं सेवा समिति, पेंसनर संघ समेत कई समाजसेवी संगठनों के सदस्य उपस्थित रहे।

राजनांदगांव-छ.ग.। रानी लक्ष्मीबाई की जयंती के अवसर पर ब्र.कु. पुष्पा बहन को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए रानी लक्ष्मीबाई शासकीय विद्यालय के प्राचार्य चैतराम वर्मा। साथ हैं महापौर हेमा देशमुख एवं ब्र.कु.पूनम बहन।